जेनिथ एजुकेशन

मनोविज्ञान

यूनिट 1: शिक्षा के दार्शनिक आधार

साइकोलॉजी · डेफिनिटिव रेफरेंस मैनुअल · इंग्लिश मीडियम

इस सेट में शामिल टॉपिक

12 टॉपिक, उनके क्रम में

1. उपयोगितावाद और शिक्षा: बेंथम और मिल

2. क्रिटिकल पेडागॉजी और शिक्षा पर मार्क्सवादी विचार

3. शिक्षा में अस्तित्ववाद और मानवतावाद

4. एजुकेशनल एथिक्स: अधिकार, न्याय और नैतिक विकास

5.

डेमोक्रेटिक एजुकेशन में क्रिटिकल पेडागॉजी की भूमिका: ग्राम्शी से लेकर फ्रीरे और उससे आगे

6.

निष्कर्ष: आज की शिक्षा के लिए क्रिटिकल पेडागॉजी क्यों ज़रूरी है

7.

शिक्षा में सामाजिक न्याय की शैक्षणिक नींव: लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में सिद्धांत से व्यवहार तक

8.

डेमोक्रेटिक एजुकेशन में क्रिटिकल पेडागॉजी की भूमिका: मार्क्सवादी थ्योरी से लेकर मॉडर्न क्लासरूम प्रैक्टिस तक

9.

सामाजिक सशक्तिकरण की शिक्षाशास्त्र: पाउलो फ्रेरे की मुक्ति शिक्षाशास्त्र और लोकतांत्रिक शिक्षा में इसका अनुप्रयोग

10.

समावेशी शिक्षा की शिक्षा पद्धति: पाठ्यक्रम का उपनिवेशीकरण और हाशिए पर पड़ी आवाज़ों को सशक्त बनाना

11. एडवांस्ड MCQ बैंक — 50 सवाल

12. PYQ-बेस्ड फैक्ट बैंक — 100 फैक्ट्स

उपयोगितावाद और शिक्षा: बेंथम और मिल

सादा अवलोकन

यूटिलिटेरियनिज़्म से बनी एजुकेशन का मतलब है कि स्कूल और करिकुलम ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के लिए खुशी को ज़्यादा से ज़्यादा करने और दुख को कम करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। यह फिलॉसफी, जो जेरेमी बेंथम और जॉन स्टुअर्ट मिल के काम से जुड़ी है, यह तर्क देती है कि एजुकेशन का मकसद सिर्फ़ लोगों का विकास करना नहीं है, बल्कि एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ सबकी भलाई हो। दूसरी फिलॉसफी जो व्यक्तिगत अधिकारों या नैतिक चरित्र पर फोकस करती हैं, उनसे अलग, एजुकेशन में यूटिलिटेरियनिज़्म प्रैक्टिकल नतीजों को प्राथमिकता देता है—स्टूडेंट्स को नौकरियों के लिए तैयार करना, सिविक एंगेजमेंट को बढ़ावा देना और सोशल स्टेबिलिटी पक्का करना। यह एक ऐसा फ्रेमवर्क है जो लॉजिक, सोशल साइंस और पॉलिसी-मेकिंग को मिलाता है, जो इसे मॉडर्न एजुकेशनल रिफॉर्म का आधार बनाता है।

व्युत्पत्ति और मूल अर्थ

यूटिलिटेरियन शब्द लैटिन के यूटिलिस से आया है , जिसका मतलब है "काम का।" एजुकेशन में, यूटिलिटेरियनिज़्म सिर्फ़ प्रैक्टिकल स्किल्स के बारे में नहीं है, बल्कि ऐसे सिस्टम डिज़ाइन करने के बारे में है जो ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की भलाई करें। बेंथम का हेडोनिक कैलकुलस (खुशी और दर्द को मापने का एक तरीका) और मिल का आज़ादी और व्यक्तिगत विकास पर ज़ोर, इसके दो खास आधार हैं। मुख्य विचार आसान है: अगर कोई काम या पॉलिसी दुख से ज़्यादा खुशी देती है, तो वह नैतिक रूप से सही है। एजुकेशन में, इसका मतलब ऐसी पॉलिसी हैं जो कलात्मक अभिव्यक्ति या व्यक्तिगत संतुष्टि जैसे अमूर्त आदर्शों के बजाय मापने लायक नतीजों – रोज़गार, सामाजिक मेलजोल और आर्थिक योगदान – को प्राथमिकता देती हैं।

परिभाषा बैंक

1. जेरेमी बेंथम का यूटिलिटेरियनिज़्म — सबसे बड़ी खुशी का सिद्धांत, जहाँ कामों को इस आधार पर आंका जाता है कि वे पूरी खुशी को बढ़ावा देने में कितने माहिर हैं। (— जेरेमी बेंथम, इंट्रोडक्शन टू द प्रिंसिपल्स ऑफ़ मोरल्स एंड लेजिस्लेशन , 1789)

2. जॉन स्टुअर्ट मिल का लिबरलिज़्म — यह विचार कि लोगों को अपने फ़ायदे के लिए आज़ाद होना चाहिए, जब तक कि वे दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ, और शिक्षा क्रिटिकल थिंकिंग और सेल्फ़-इम्प्रूवमेंट को बढ़ावा देने में भूमिका निभाती है। (— जॉन स्टुअर्ट मिल, ऑन लिबर्टी , 1859)

3. समाज कल्याण के लिए एक टूल के तौर पर शिक्षा — स्कूलों को छात्रों को समाज में प्रोडक्टिव भूमिकाओं के लिए तैयार करना चाहिए, जिससे आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित हो और असमानता कम हो। (— यूटिलिटेरियन एजुकेशनल थ्योरिस्ट, जैसे, हेनरी फॉसेट, एजुकेशन एंड हैप्पीनेस , 1870s)

4. यूटिलिटेरियन एजुकेशन बनाम मोरल एजुकेशन — यूटिलिटेरियनिज़्म नतीजों (जैसे, नौकरी के लिए तैयारी) पर फोकस करता है, वहीं मोरल एजुकेशन कैरेक्टर डेवलपमेंट और एथिकल रीजनिंग पर ज़ोर देती है। (— डेविड गौथियर, मोरल लक , 1986)

5. आसान भाषा में दोबारा कहना: यूटिलिटेरियन एजुकेशन एक ऐसा सिस्टम है जिसमें स्कूल और करिकुलम को इस तरह से डिज़ाइन किया जाता है कि सबकी भलाई ज़्यादा से ज़्यादा हो, ताकि स्टूडेंट्स को ऐसी स्किल्स मिलें जिनसे समाज को फ़ायदा हो, और अक्सर अपनी पसंद या कला की चीज़ों की कीमत पर।

ऐतिहासिक विकास

प्राचीन जड़ें: व्यावहारिकता और नागरिक कर्तव्य

समाज के फ़ायदे के लिए एक टूल के तौर पर शिक्षा का विचार बेंथम और मिल से भी पुराना है। अरस्तू (निकोमैचेन एथिक्स , 350 BCE) जैसे पुराने ग्रीक फ़िलॉसफ़रों का कहना था कि शिक्षा को नागरिकों को नागरिक जीवन के लिए तैयार करना चाहिए, लेकिन उनका फ़ोकस मापने लायक नतीजों के बजाय अच्छाई पर था। भारत में, न्याय-सूत्र (4th सदी BCE) और अर्थशास्त्र (3rd सदी BCE) ने शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक सफलता पाने के एक तरीके के तौर पर ज़ोर दिया, हालांकि ज़रूरी नहीं कि यह काम के मकसद के लिए हो।

ज्ञानोदय और बेंथम का हेडोनिक कैलकुलस (18वीं सदी)

जेरेमी बेंथम (1748–1832), एक ब्रिटिश फिलॉसफर और लीगल रिफॉर्मर, ने एन इंट्रोडक्शन टू द प्रिंसिपल्स ऑफ मोरल्स एंड लेजिस्लेशन (1789) में यूटिलिटेरियनिज्म को फॉर्मल बनाया। उनके हेडोनिक कैलकुलस ने प्रपोज किया कि प्लेजर (खुशी) और पेन (दुख) को क्वांटिफाई किया जा सकता है, और पॉलिसी को ओवरऑल खुशी पर उनके नेट इफेक्ट के आधार पर जज किया जाना चाहिए। एजुकेशन पर बेंथम का असर शुरू में इनडायरेक्ट था, लेकिन रेशनल, एविडेंस-बेस्ड डिसीजन-मेकिंग पर उनके जोर ने यूटिलिटेरियन एजुकेशनल पॉलिसी के लिए बेसवर्क तैयार किया।

मिल का उदारवाद और शिक्षा सुधार (19वीं सदी)

ऑन लिबर्टी (1859) और यूटिलिटेरियनिज़्म (1861) में बेंथम के विचारों को आगे बढ़ाया , और तर्क दिया कि शिक्षा को न केवल छात्रों को काम के लिए बल्कि खुद को बेहतर बनाने और क्रिटिकल थिंकिंग के लिए भी तैयार करना चाहिए। उनके लिबरलिज़्म ने व्यक्तिगत आज़ादी पर ज़ोर दिया, लेकिन उन्होंने यह भी तर्क दिया कि शिक्षा सभी के लिए उपलब्ध होनी चाहिए, न कि केवल अमीर लोगों के लिए। मिल के विचारों ने ब्रिटेन और उसके बाहर पब्लिक स्कूलों और वोकेशनल ट्रेनिंग के विकास पर असर डाला।

20वीं सदी: संस्थागतकरण और आलोचना

20वीं सदी में **नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP) 1986 जैसी पॉलिसी के ज़रिए एजुकेशन में यूटिलिटेरियनिज़्म को इंस्टीट्यूशनल बनाया गया** , जिसमें वोकेशनल ट्रेनिंग और प्रैक्टिकल स्किल पर ज़ोर दिया गया। हालाँकि, जॉन रॉल्स (ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस , 1971) जैसे क्रिटिक्स ने तर्क दिया कि यूटिलिटेरियनिज़्म से गलत नतीजे हो सकते हैं, क्योंकि यह अक्सर हाशिए पर पड़े ग्रुप्स की कीमत पर ज़्यादातर लोगों की खुशी को प्राथमिकता देता है। **NEP 2020 ने** यूटिलिटेरियन प्रिंसिपल्स को बनाए रखा लेकिन पूरे डेवलपमेंट पर ध्यान दिया, जिसमें क्रिटिकल थिंकिंग और क्रिएटिविटी के साथ प्रैक्टिकल स्किल्स को बैलेंस किया गया।

प्रमुख सिद्धांत और विचारक

जेरेमी बेंथम का हेडोनिक कैलकुलस और शिक्षा

बेंथम के यूटिलिटेरियनिज़्म को अक्सर "सबसे ज़्यादा लोगों के लिए सबसे ज़्यादा खुशी" के तौर पर बताया जाता है। एजुकेशन में, इसका मतलब है कि स्कूलों को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि वे स्टूडेंट्स को ऐसी स्किल्स सिखा सकें जिनसे उन्हें स्टेबल नौकरी, सोशल मोबिलिटी और पूरी तरह से अच्छा महसूस हो। उनका नज़रिया प्रैक्टिकल था: अगर कोई पॉलिसी या करिकुलम दुख से ज़्यादा खुशी देता है, तो वह सही है। उदाहरण के लिए, आर्ट्स के बजाय STEM एजुकेशन को प्राथमिकता देना यूटिलिटेरियन माना जा सकता है क्योंकि इससे इकोनॉमिक प्रोडक्टिविटी बढ़ती है।

जॉन स्टुअर्ट मिल का उदारवाद और शिक्षा

मिल ने बेंथम के विचारों को आगे बढ़ाते हुए कहा कि शिक्षा सिर्फ़ काम की ही नहीं बल्कि उदार भी होनी चाहिए। ' ऑन लिबर्टी' में , उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि लोगों को अपने फ़ायदे के लिए आज़ादी होनी चाहिए, बशर्ते वे दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ। इससे यह विचार आया कि शिक्षा को सिर्फ़ नौकरी के लिए तैयार होने के लिए नहीं, बल्कि क्रिटिकल थिंकिंग, खुद को ज़ाहिर करने और नैतिक विकास को बढ़ावा देना चाहिए। उदाहरण के लिए, मिल ने पब्लिक एजुकेशन का समर्थन किया क्योंकि यह लोगों को सोच-समझकर फ़ैसले लेने और समाज में योगदान देने में मदद कर सकती है।

शिक्षा में उपयोगितावाद की आलोचना

आलोचकों का तर्क है कि शिक्षा में उपयोगितावाद समस्या पैदा कर सकता है:

- **रॉल्स का अंतर सिद्धांत: '** ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस' में , जॉन रॉल्स ने तर्क दिया कि यूटिलिटेरियनिज़्म से गलत नतीजे हो सकते हैं, क्योंकि यह अक्सर सबसे कम फ़ायदे वाले लोगों की कीमत पर ज़्यादातर लोगों को फ़ायदा पहुँचाता है। उदाहरण के लिए, अगर वोकेशनल ट्रेनिंग को आर्ट्स की पढ़ाई से ज़्यादा प्राथमिकता दी जाती है, तो इससे उन क्रिएटिव लोगों को नुकसान हो सकता है जो पारंपरिक करियर के रास्तों में फिट नहीं होते।
- **नैतिक और नैतिक चिंताएँ:** कुछ लोग तर्क देते हैं कि यूटिलिटेरियनिज़्म उन पॉलिसी को सही ठहरा सकता है जो लोगों को नुकसान पहुँचाती हैं, अगर उनसे सामूहिक खुशी बढ़ती है। उदाहरण के लिए, आर्ट्स प्रोग्राम के लिए फंडिंग कम करना यूटिलिटेरियन लग सकता है अगर इससे आर्थिक विकास बढ़ता है, लेकिन यह सांस्कृतिक पहचान और क्रिएटिविटी को भी नुकसान पहुँचा सकता है।
- **भारतीय परिप्रेक्ष्य: रवींद्रनाथ टैगोर** (गीतकार , 1913) और **महात्मा गांधी** (हिंद स्वराज , 1909) जैसे दार्शनिकों ने भौतिक सफलता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उपयोगितावाद की आलोचना की, और तर्क दिया कि शिक्षा को नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी करना चाहिए।

आधुनिक शिक्षा में अनुप्रयोग

1. मास एजुकेशन: 19वीं और 20वीं सदी में पब्लिक एजुकेशन को बढ़ाने में यूटिलिटेरियनिज़्म ने अहम भूमिका निभाई। **नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP) 1986** और **NEP 2020 जैसी पॉलिसीज़** इनक्लूसिव एजुकेशन पर ज़ोर देती हैं, जिससे यह पक्का होता है कि सभी स्टूडेंट्स को बेसिक और वोकेशनल ट्रेनिंग मिले।
2. वोकेशनल ट्रेनिंग: स्कूल अब स्टूडेंट्स को वर्कफोर्स के लिए तैयार करने के लिए एकेडमिक प्रोग्राम के साथ वोकेशनल कोर्स भी देते हैं। उदाहरण के लिए, **स्किल इंडिया मिशन** (2015) का मकसद यूटिलिटेरियन प्रिंसिपल्स के साथ तालमेल बिठाते हुए 40 मिलियन युवाओं को स्किल्ड ट्रेड्स में ट्रेन करना है।
3. सोशल वेलफेयर: यूटिलिटेरियन एजुकेशन पॉलिसी अक्सर पिछड़े ग्रुप्स को एजुकेशन तक पहुँच देकर असमानता कम करने पर फोकस करती हैं। उदाहरण के लिए, भारत में **राइट टू एजुकेशन एक्ट (RTE) 2009** 6-14 साल के बच्चों के लिए फ्री और ज़रूरी एजुकेशन पक्का करता है, जिसका मकसद सोशल मोबिलिटी को बेहतर बनाना है।

पैराडाइम तुलना: शिक्षा में उपयोगितावाद बनाम अन्य दर्शन

पहलू	उपयोगीता	उदारतावाद	मानवतावाद	आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र
प्राथमिक लक्ष्य	खुशी/सामाजिक कल्याण को अधिकतम करें	व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा	मानवीय क्षमता और गरिमा का विकास करें	दमनकारी व्यवस्थाओं और सत्ता को चुनौती दें
शिक्षा पर ध्यान	नौकरी के लिए तैयारी, व्यावहारिक कौशल	आलोचनात्मक सोच, आत्म-अभिव्यक्ति	समग्र विकास, नैतिक विकास	सामाजिक न्याय, असमानता के बारे में जागरूकता
प्रमुख विचारक	बेंथम, मिल	लोके, रूसो, मिल	रूसो, डेवी, मास्लो	Freire, Gramsci, Freire
उदाहरण नीति	व्यावसायिक प्रशिक्षण, जन शिक्षा	पब्लिक स्कूल, बोलने की आज़ादी	मोंटेसरी, समग्र पाठ्यक्रम	उपनिवेशवाद-विरोधी शिक्षा, समुदाय-आधारित शिक्षा
आलोचना	व्यक्तिगत अधिकारों को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं, अल्पसंख्यकों को नुकसान पहुंचा सकते हैं	सामूहिक भलाई को नज़रअंदाज़ करता है, एलीटिस्ट हो सकता है	भौतिकवादी हो सकते हैं, सिस्टम से जुड़े मुद्दों को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं	बहुत ज़्यादा कट्टरपंथी हो सकते हैं, किसी एक एजेंसी को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं

विश्लेषणात्मक ढांचे और अनुप्रयोग

1. शिक्षा में हेडोनिक कैलकुलस

बेंथम के हेडोनिक कैलकुलस को अलग-अलग करिकुलम से जुड़ी खुशी और दुख को मापकर एजुकेशनल पॉलिसी पर लागू किया जा सकता है। उदाहरण के लिए:
• **उदाहरण:** अगर कोई स्कूल STEM एजुकेशन पर ज़ोर देता है, तो यह स्टूडेंट्स को ज़्यादा सैलरी वाली नौकरियों के लिए तैयार करके उनकी खुशी बढ़ा सकता है। लेकिन, अगर यह आर्ट्स एजुकेशन को नज़रअंदाज़ करता है, तो यह क्रिएटिव लोगों की खुशी कम कर सकता है।
• **आलोचना:** कैलकुलस यह मानता है कि खुशी और दर्द को मापा जा सकता है, जो शिक्षा में मुश्किल है जहां व्यक्तिपरक अनुभव भूमिका निभाते हैं।

2. उदारवाद और शिक्षा

मिल का लिबरलिज़्म इस बात पर ज़ोर देता है कि एजुकेशन को लोगों को क्रिटिकली सोचने और अपने फ़ायदे के लिए मज़बूत बनाना चाहिए। इसे इन चीज़ों में देखा जा सकता है:
• **उदाहरण:** जो पब्लिक स्कूल क्रिटिकल थिंकिंग और फ्री एक्सप्रेशन सिखाते हैं, वे लिबरल वैल्यूज़ के साथ अलाइन होते हैं, जिससे स्टूडेंट्स को अपने आइडिया डेवलप करने का मौका मिलता है।
• **आलोचना:** लिबरलिज़्म कभी-कभी सामूहिक भलाई के बजाय व्यक्तिगत आज़ादी को प्राथमिकता दे सकता है, जिससे ऐसी पॉलिसी बन सकती हैं जिनसे पूरे समाज को फ़ायदा न हो।

3. व्यावसायिक प्रशिक्षण और सामाजिक कल्याण

वोकेशनल ट्रेनिंग, शिक्षा में यूटिलिटेरियनिज़्म का एक मुख्य एप्लीकेशन है। उदाहरण के लिए:
• **उदाहरण:** स्किल **इंडिया मिशन** का मकसद युवाओं को स्किल्ड ट्रेड में ट्रेनिंग देना है, जिससे रोज़गार के मौके बढ़ सकते हैं और गरीबी कम हो सकती है।
• **आलोचना:** अगर वोकेशनल ट्रेनिंग बहुत छोटी है, तो इससे स्टूडेंट्स के क्रिएटिव या आर्टिस्टिक करियर के मौके कम हो सकते हैं।

4. उपयोगितावाद और अन्य दर्शनों में संतुलन

मॉडर्न एजुकेशनल पॉलिसी अक्सर यूटिलिटेरियनिज़्म को दूसरी फिलॉसफी के साथ मिला देती हैं। उदाहरण के लिए:
• **उदाहरण:** एनईपी **2020** व्यावसायिक प्रशिक्षण और आलोचनात्मक सोच दोनों पर जोर देता है, जिसका उद्देश्य समग्र विकास के साथ व्यावहारिक कौशल को संतुलित करना है।
• **आलोचना:** यह तरीका मुश्किल हो सकता है, क्योंकि इसमें अलग-अलग लक्ष्यों में बैलेंस बनाना होता है और यह पक्का करना होता है कि किसी भी सोच को ज़्यादा प्राथमिकता न दी जाए।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा फोकस

परीक्षा तथ्य क्लस्टर

1. जेरेमी बेंथम के हेडोनिक कैलकुलस को एन इंट्रोडक्शन टू द प्रिंसिपल्स ऑफ मोरल्स एंड लेजिस्लेशन (1789) में पेश किया गया था और इसका इस्तेमाल

यूटिलिटेरियन फैसले लेने के लिए खुशी और दर्द को मापने के लिए किया जाता है।

2. * जॉन स्टुअर्ट मिल की ऑन लिबर्टी* (1859) का तर्क है कि शिक्षा को सामूहिक कल्याण सुनिश्चित करते हुए व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए।

3. **रॉल्स का अंतर सिद्धांत** (1971) यह तर्क देकर उपयोगितावाद की आलोचना करता है कि नीतियों का लाभ कम से कम सुविधा प्राप्त समूह को मिलना चाहिए।

4. **नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP) 1986** ने यूटिलिटेरियन प्रिंसिपल्स के साथ तालमेल बिठाने के लिए वोकेशनल ट्रेनिंग और प्रैक्टिकल स्किल्स पर ज़ोर दिया।

5. **NEP 2020 में** वोकेशनल ट्रेनिंग और सोशल वेलफेयर जैसे यूटिलिटेरियन लक्ष्यों को बनाए रखते हुए होलिस्टिक डेवलपमेंट पर फोकस शामिल है।

6. **शिक्षा में यूटिलिटेरियनिज़्म की आलोचना** में व्यक्तिगत अधिकारों को नज़रअंदाज़ करने और हाशिए पर पड़े ग्रुप्स को होने वाले नुकसान की चिंता शामिल है।

7. * हेनरी फॉसेट की किताब एजुकेशन एंड हैप्पीनेस* (1870 के दशक) यूटिलिटेरियन एजुकेशन का समर्थन करती है, जिसमें तर्क दिया गया है कि स्कूलों को स्टूडेंट्स को समाज में प्रोडक्टिव रोल के लिए तैयार करना चाहिए।

8. **शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE) 2009** 6-14 साल के बच्चों के लिए मुफ़्त और ज़रूरी शिक्षा पक्का करता है, जिसका मकसद असमानता को कम करना और उपयोगितावादी लक्ष्यों के साथ तालमेल बिठाना है।

MCQ ट्रैप अलर्ट

1. **गलत:** बेंथम का यूटिलिटेरियनिज़्म सिर्फ़ खुशी को ज़्यादा से ज़्यादा करने पर फ़ोकस करता है। — **असल में:** बेंथम का यूटिलिटेरियनिज़्म, या सबसे बड़ी खुशी का सिद्धांत, खुशी और दर्द के बीच बैलेंस बनाकर पूरी खुशी को ज़्यादा से ज़्यादा करने पर फ़ोकस करता है।

2. **गलत:** मिल की ऑन लिबर्टी का तर्क है कि शिक्षा को केवल नौकरी की तैयारी पर ध्यान देना चाहिए। — **असल में:** मिल की ऑन लिबर्टी का तर्क है कि शिक्षा को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आलोचनात्मक सोच की रक्षा करनी चाहिए, न कि केवल नौकरी की तैयारी पर।

3. **गलत:** रॉल्स का अंतर सिद्धांत यह सुनिश्चित करके उपयोगितावाद का समर्थन करता है कि नीतियों से बहुमत को लाभ हो। - **वास्तव में:** रॉल्स का अंतर सिद्धांत यह तर्क देकर उपयोगितावाद की आलोचना करता है कि नीतियों से केवल बहुमत को ही नहीं, बल्कि सबसे कम सुविधा प्राप्त समूह को लाभ होना चाहिए।

अभिकथन-कारण

1. **A:** शिक्षा में उपयोगितावाद ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के लिए खुशी को ज़्यादा से ज़्यादा करने पर ध्यान देता है।

उत्तर: जॉन स्टुअर्ट मिल का यूटिलिटेरियनिज़्म सबसे बड़ी खुशी के सिद्धांत पर ज़ोर देकर इस विचार का समर्थन करता है।

→ A और R दोनों सत्य हैं, और R, A को सही ढंग से समझाता है।

2. **A:** रॉल्स का अंतर सिद्धांत शिक्षा में उपयोगितावाद की आलोचना करता है।

R: रॉल्स का तर्क है कि यूटिलिटेरियनिज़्म, कम सुविधा वाले लोगों के बजाय ज़्यादातर लोगों की खुशी को प्राथमिकता देकर गलत नतीजे ला सकता है।

→ A और R दोनों सत्य हैं, और R, A को सही ढंग से समझाता है।

निम्नलिखित का मिलान करें

अवधारणा	परिभाषा/कार्य/वर्ष
जेरेमी बेंथम	हेडोनिक कैलकुलस, नैतिकता और कानून के सिद्धांतों का परिचय (1789)
जॉन स्टुअर्ट मिल	ऑन लिबर्टी (1859), शिक्षा में उदारवाद
रॉल्स का अंतर सिद्धांत	उपयोगितावाद की आलोचना, न्याय का सिद्धांत (1971)
एनईपी 1986	व्यावसायिक प्रशिक्षण पर ज़ोर, 1986
एनईपी 2020	उपयोगितावादी लक्ष्यों के साथ समग्र विकास, 2020

विजुअल्स

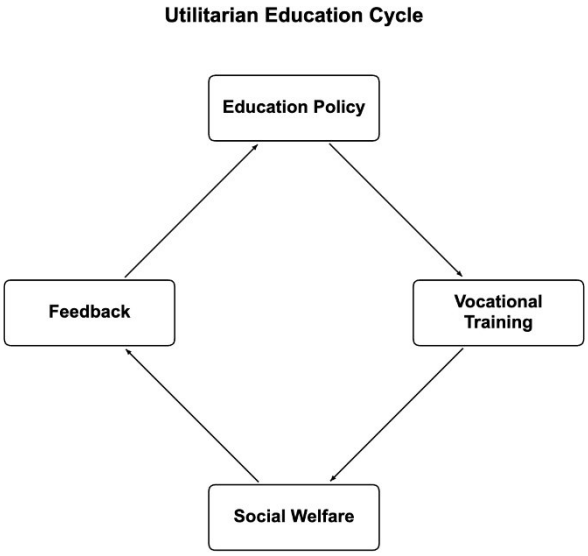

(यह साइकिल दिखाता है कि कैसे यूटिलिटेरियन एजुकेशन पॉलिसी वोकेशनल ट्रेनिंग की ओर ले जाती हैं, जो बदले में सोशल वेलफेयर में योगदान देती है, जिससे एक लगातार चलने वाला लूप बनता है।)

5, 7, 8, 9, 10

(यह ग्राफ़ यूटिलिटेरियन एजुकेशन पॉलिसी की वजह से समय के साथ हैप्पीनेस इंडेक्स को दिखा सकता है, जो ऊपर की ओर ट्रेंड दिखाता है।)

याद रखने के लिए ज़रूरी बातें

1. **जेरेमी बेंथम के हेडोनिक कैलकुलस को** 1789 में औपचारिक रूप दिया गया था और इसका इस्तेमाल यूटिलिटेरियन फैसले लेने के लिए खुशी और दर्द को मापने के लिए किया जाता है।

2. * जॉन स्टुअर्ट मिल की ऑन लिबर्टी* (1859) का तर्क है कि शिक्षा को सामूहिक कल्याण सुनिश्चित करते हुए व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए।

3. **रॉल्स का अंतर सिद्धांत** (1971) निष्पक्षता पर जोर देने और कम से कम सुविधा प्राप्त लोगों को लाभ पहुंचाने के द्वारा उपयोगितावाद की आलोचना करता है।

4. **एनईपी 1986** ने शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण और व्यावहारिक कौशल पर जोर दिया।

5. **NEP 2020 में** उपयोगितावादी लक्ष्यों को बनाए रखते हुए समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

6. **यूटिलिटेरियनिज़्म की आलोचना** में व्यक्तिगत अधिकारों को नज़रअंदाज़ करने और हाशिए पर पड़े ग्रुप्स को होने वाले नुकसान की चिंताएं शामिल हैं।

7. * हेनरी फॉसेट की एजुकेशन एंड हैप्पीनेस* (1870 का दशक) स्टूडेंट्स को प्रोडक्टिव रोल के लिए तैयार करके यूटिलिटेरियन एजुकेशन को सपोर्ट करती है।

8. **शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE) 2009** 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित करता है।

आम कन्फ्यूजन और एग्जामिनर ट्रैप

1. **उपयोगितावाद बनाम उदारवाद:**

• **कन्फ्यूजन:** दोनों फिलॉसफी पर्सनल वेल-बीइंग पर फोकस करती हैं, लेकिन यूटिलिटेरियनिज्म कलेक्टिव खुशी को प्रायोरिटी देता है, जबकि लिबरलिज्म पर्सनल फ्रीडम पर जोर देता है।

• **अंतर:** यूटिलिटेरियनिज़्म का मतलब है पूरी खुशी को बढ़ाना, जबकि लिबरलिज़्म का मतलब है पर्सनल अधिकारों की रक्षा करना।

2. **रॉल्स का अंतर सिद्धांत बनाम उपयोगितावाद:**

• **भ्रम:** रॉल्स का अंतर सिद्धांत कम से कम सुविधा प्राप्त लोगों पर ध्यान केंद्रित करके उपयोगितावाद का समर्थन करता प्रतीत होता है, लेकिन यह वास्तव में यह तर्क देकर उपयोगितावाद की आलोचना करता है कि नीतियों का लाभ कम से कम सुविधा प्राप्त समूह को मिलना चाहिए।

• **अंतर:** रॉल्स का सिद्धांत निष्पक्षता और समानता के बारे में है, जबकि उपयोगितावाद खुशी को अधिकतम करने के बारे में है।

3. **वोकेशनल ट्रेनिंग बनाम होलिस्टिक डेवलपमेंट:**

• **कन्फ्यूजन:** वोकेशनल ट्रेनिंग को अक्सर यूटिलिटेरियन माना जाता है, जबकि होलिस्टिक डेवलपमेंट को ह्यूमैनिस्टिक या क्रिटिकल माना जाता है।

• **खासियत:** वोकेशनल ट्रेनिंग प्रैक्टिकल स्किल्स और जॉब के लिए तैयार होने पर फोकस करती है, जबकि होलिस्टिक डेवलपमेंट ओवरऑल ग्रोथ और क्रिटिकल थिंकिंग पर ज़ोर देता है।

एक नज़र में संशोधन

एजुकेशन में यूटिलिटेरियनिज़्म एक ऐसी सोच है जो प्रैक्टिकल स्किल्स और वोकेशनल ट्रेनिंग के ज़रिए खुशी और सोशल वेलफेयर को ज़्यादा से ज़्यादा करने को प्राथमिकता देती है। बेंथम के हेडोनिक कैलकुलस और मिल के लिबरलिज़्म ने यूटिलिटेरियन एजुकेशनल पॉलिसीज़ की नींव रखी। रॉल्स जैसे क्रिटिक्स का तर्क है कि यूटिलिटेरियनिज़्म से गलत नतीजे हो सकते हैं, और **NEP 2020 जैसी मॉडर्न पॉलिसीज़ का** मकसद यूटिलिटेरियन लक्ष्यों को होलिस्टिक डेवलपमेंट के साथ बैलेंस करना है। मुख्य अंतर यूटिलिटेरियनिज़्म के कलेक्टिव वेल-बीइंग पर फोकस और लिबरलिज़्म के इंडिविजुअल फ्रीडम पर फोकस के बीच है।

जेरेमी बेंथम का हेडोनिक कैलकुलस और शिक्षा

यूटिलिटेरियनिज़्म के आर्किटेक्ट, जेरेमी बेंथम (1748–1832) ने अपने मोरल कैलकुलस को **हेडोनिक खुशी और दर्द** के हिसाब से बनाया — यह आइडिया कि काम सही हैं अगर वे ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के लिए खुशी को ज़्यादा से ज़्यादा और दर्द को कम से कम करें। बेंथम के लिए, एजुकेशन **हेडोनिक यूटिलिटी को बढ़ाने का एक टूल था** , जिससे स्टूडेंट्स में ऐसी आदतें डेवलप होती थीं जो दुख को कम करके और सबकी खुशी को बढ़ाकर समाज की भलाई को बढ़ावा देती थीं। उनका अप्रोच **इंस्ट्रूमेंटलिस्ट था** : एजुकेशन का मकसद खुद मोरल बनाना नहीं था, बल्कि समाज की भलाई को बड़े पैमाने पर हासिल करने का प्रैक्टिकल तरीका था।
बेंथम के **हेडोनिक कैलकुलस** (खुशी और दर्द को मापने का एक तरीका) को शिक्षा में दो खास तरीकों से लागू किया गया:

1. पाठ्यक्रम डिजाइन : उन्होंने एक **व्यावहारिक, कौशल-आधारित पाठ्यक्रम की वकालत की** - अमूर्त ज्ञान की तुलना में व्यावसायिक प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया - क्योंकि उनका मानना था कि सार्थक शिक्षा को तत्काल सामाजिक जरूरतों के साथ संरेखित किया जाना चाहिए।

2. क्लासरूम डिसिप्लिन : उनके मशहूर **"पैनोप्टिकॉन"** (एक जेल का डिज़ाइन जहाँ लगातार निगरानी से बात मानना पक्का होता था) ने **डिसिप्लिन के बारे में उनके नज़रिए को प्रभावित किया, जो नैतिक तौर पर एक होने का एक तरीका है** — स्टूडेंट्स को स्ट्रक्चर्ड, रिवॉर्ड-बेस्ड सिस्टम के ज़रिए यूटिलिटेरियन वैल्यूज़ को अपने अंदर उतारने की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए।

मुख्य बेंथमाइट शिक्षा सिद्धांत:

• **गुण से ज़्यादा आनंद** : शिक्षा में सैद्धांतिक ज्ञान के बजाय **व्यावहारिक कौशल** (जैसे, व्यापार, शारीरिक श्रम) को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, क्योंकि बेन्थम ने अमूर्त शिक्षा को वास्तविक दुनिया की उपयोगिता के लिए अप्रासंगिक माना था।

• **सकारात्मक सुदृढ़ीकरण** : उन्होंने दंड की तुलना में **पुरस्कार-आधारित अनुशासन** (जैसे, प्रशंसा, प्रोत्साहन) का समर्थन किया, उनका तर्क था कि प्रोत्साहन के माध्यम से नैतिक आदतों को आकार दिया जा सकता है।

• **अंतिम लक्ष्य के रूप में सामाजिक कल्याण** : शिक्षा एक **सार्वजनिक भलाई थी** , न कि व्यक्तिगत खोज- इसकी सफलता को सामाजिक खुशी में इसके योगदान से मापा जाता था।

जॉन स्टुअर्ट मिल की लिबरलिज़्म और एजुकेशन: ऑन लिबर्टी एंड यूटिलिटेरियनिज़्म

बेंथम का यूटिलिटेरियनिज़्म **हेडोनिक** (खुशी/दर्द पर आधारित) था, लेकिन **जॉन स्टुअर्ट मिल (1806–1873)** ने इसे **लिबरल फ्रेमवर्क में बढ़ाया** , यह तर्क देते हुए कि शिक्षा को **व्यक्तिगत आज़ादी और सामाजिक उपयोगिता के बीच बैलेंस बनाना चाहिए** । शिक्षा पर उनका सबसे असरदार काम ऑन लिबर्टी (1859) था, जहाँ उन्होंने यूटिलिटेरियनिज़्म के ज़्यादातर राय को आँख बंद करके मानने की आलोचना की, और यूटिलिटेरियनिज़्म (1863), जहाँ उन्होंने कैलकुलस को एक **नियम-आधारित सिस्टम में बदला** ।

मिल का शिक्षा दर्शन: स्वतंत्रता बनाम उपयोगिता

मिल का नज़रिया दोतरफ़ा था :

1. व्यक्तिगत स्वतंत्रता एक **मौलिक अधिकार था** - शिक्षा को व्यक्तिगत स्वायत्तता की रक्षा करनी चाहिए, भले ही इससे सामूहिक उपयोगिता कम हो।

2. उपयोगितावाद को व्यक्तिगत अधिकारों का सम्मान करना चाहिए - यदि किसी कानून या व्यवहार से व्यक्तियों को नुकसान पहुँचता है (जैसे, स्वतंत्र विचार को प्रतिबंधित करना), तो यह अन्यायपूर्ण था, भले ही इसके व्यापक लाभ कुछ भी हों।

मुख्य मिलियन सिद्धांत:

• **"उच्च सुख"** : मिल ने तर्क दिया कि **बौद्धिक और नैतिक विकास** (जैसे, आलोचनात्मक सोच, आत्म-सुधार) केवल भौतिक सुखों से बेहतर थे - शिक्षा को इन्हें बढ़ावा देना चाहिए।

• **आत्म-सुधार के रूप में शिक्षा** : बेन्थम के विपरीत, मिल का मानना था कि **अमूर्त ज्ञान** (जैसे, दर्शन, विज्ञान) नैतिक और बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक था, क्योंकि इससे व्यक्तियों को अपनी खुशी का आकलन करने की अनुमति मिलती थी।

• **अंगूठे का नियम** : मिल के **हेडोनिक कलन को नियम-आधारित प्रणाली** में परिष्कृत किया गया था - यदि वे अधिकतम संख्या के लिए अधिकतम खुशी को बढ़ावा देते हैं तो कार्य सही थे, लेकिन व्यक्तियों को अपनी खुशी का पीछा करने का अधिकार था **जब तक कि इससे दूसरों को नुकसान न हो** ।

मिल्स ऑन लिबर्टी एंड एजुकेशन

ऑन लिबर्टी में , मिल ने तर्क दिया कि **शिक्षा ज़बरदस्ती का ज़रिया नहीं होनी चाहिए — इसे लोगों को बिना किसी रोक-टोक के अपनी काबिलियत बढ़ाने** की इजाज़त देनी चाहिए। उनका मशहूर **"नुकसान का सिद्धांत"** (ऑन लिबर्टी से) शिक्षा पर इस तरह लागू किया गया था:

• **राज्य द्वारा लागू शिक्षा नहीं** : मिल ने **अनिवार्य शिक्षा** (एक बाद का विकास) का विरोध किया क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन करती थी।

• **रटने की बजाय आलोचनात्मक सोच : शिक्षा को** सिर्फ याद करना नहीं, बल्कि **तर्क और आत्म-निर्देशन** सिखाना चाहिए ।

• **विचारों में विविधता** : स्कूलों को छात्रों को केवल बहुमत के विचारों से ही नहीं, बल्कि **विभिन्न दृष्टिकोणों से भी अवगत कराना चाहिए।**

उदाहरण आवेदन :
मिल के दर्शन ने **प्रगतिशील शिक्षा को प्रभावित किया** (जैसे, डेवी की **अनुभवात्मक शिक्षा**), जहाँ छात्रों को **अधिकार पर सवाल उठाने** और अपने स्वयं के नैतिक ढांचे को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है - बेन्थम के **ऊपर से नीचे, पुरस्कार-आधारित** दृष्टिकोण के विपरीत।

शिक्षा में उपयोगितावाद की आलोचनाएँ

एजुकेशन में यूटिलिटेरियनिज़्म के इस्तेमाल को **तीन बड़ी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है** , हर आलोचना अलग-अलग फिलोसोफिकल और प्रैक्टिकल एंगल से की गई है:

समीक्षक	मुख्य आलोचना	मुख्य विद्वत्तापूर्ण तर्क
जॉन रॉल्स	**उपयोगिता पर निष्पक्षता** : उपयोगितावाद **वितरण न्याय को अनदेखा करता है** ।	ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस (1971) में , रॉल्स ने तर्क दिया कि **शिक्षा को सिर्फ़ सामूहिक खुशी को नहीं, बल्कि अवसर की समानता को प्राथमिकता देनी चाहिए** । उनका **"डिफरेंस प्रिंसिपल"** (रिसोर्स सबसे कम सुविधा वाले लोगों को दिए जाने चाहिए) बेंथम/मिल के एग्रीगेट यूटिलिटी पर फोकस को सीधी चुनौती देता है।
काल मार्क्स	**क्लास बायस** : यूटिलिटेरियनिज़्म **बुर्जुआ हितों की सेवा करता है** ।	**वर्ग वर्चस्व** के एक उपकरण के रूप में देखा - उत्पादकता पर उपयोगितावाद का ध्यान **श्रम के शोषण को नजरअंदाज करता था** । उनकी आलोचना को बाद में **आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र** (जैसे, पाउलो फ्रीरे) में औपचारिक रूप दिया गया।
नोम चॉम्स्की	**कॉग्निटिव बायस** : एजुकेशन **मैनिपुलेटिव है** , न्यूट्रल नहीं ।	चॉम्स्की ने तर्क दिया कि यूटिलिटेरियन शिक्षा **इनाम/सज़ा के ज़रिए व्यवहार को आकार देती है** , न कि सच्ची ऑटोनॉमी के ज़रिए। **लिंग्विस्टिक डिटरमिनिज़्म पर उनके काम से** पता चलता है कि शिक्षा में सिर्फ़ यूटिलिटी ही नहीं, बल्कि **क्रिटिकल थिंकिंग भी डेवलप होनी चाहिए।**

रॉल्स का अंतर सिद्धांत और शिक्षा

रॉल्स का **"डिफरेंस प्रिंसिपल"** (ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस से) सीधे यूटिलिटेरियनिज़्म के **मैक्सिमाइज़िंग हैप्पीनेस** अप्रोच का उल्टा है:

• **उपयोगितावाद** : शिक्षा को **समग्र खुशी को अधिकतम करना चाहिए** (उदाहरण के लिए, बेन्थम का व्यावसायिक कौशल पर ध्यान केंद्रित करना)।

• **रॉल्सियन न्याय** : शिक्षा को **असमानता कम करनी चाहिए** - सबसे कम सुविधा प्राप्त लोगों को सबसे अधिक संसाधन प्राप्त होने चाहिए, भले ही इससे समग्र उपयोगिता कम हो जाए।

उदाहरण :

अगर कोई यूटिलिटेरियन स्कूल **STEM एजुकेशन** (इकॉनमी के लिए हाई यूटिलिटी) को प्रायोरिटी देता है, तो एक रॉल्सियन स्कूल **आर्ट्स प्रोग्राम को बढ़ा सकता है** ताकि मार्जिनलाइज्ड स्टूडेंट्स को सक्सेस का ज़्यादा मौका मिल सके।

आज शिक्षा में उपयोगितावाद के अनुप्रयोग

यूटिलिटेरियनिज़्म का असर **तीन खास एरिया में बना हुआ है** , हालांकि मॉडर्न अडैप्टेशन इसकी कमियों को दूर करते हैं:

1. जन शिक्षा और पब्लिक स्कूल

बेंथम के **इंस्ट्रूमेंटलिस्ट** अप्रोच ने **मॉडर्न पब्लिक एजुकेशन को** दो तरह से प्रभावित किया:

• **वोकेशनल ट्रेनिंग** : कई **टेक्निकल स्कूल और अप्रेंटिसशिप** (जैसे, भारत का **नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन**) बेंथम के इस विश्वास से सहमत हैं कि एब्स्ट्रैक्ट नॉलेज के बजाय **प्रैक्टिकल स्किल्स को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।**

• **अनुशासन और पुरस्कार** : स्कूल अभी भी व्यवहार को आकार देने के लिए **सकारात्मक सुदृढीकरण** (जैसे, प्रशंसा, ग्रेड) का उपयोग करते हैं - हालांकि आधुनिक शिक्षण पद्धति (जैसे, **विकास मानसिकता**) ने बेन्थम के **दंड-भारी** तरीकों को नरम कर दिया है।

आलोचना :

यूटिलिटेरियनिज़्म जहां **मास एजुकेशन को सही ठहराता है** , वहीं क्रिटिक्स का कहना है कि यह **स्टूडेंट्स को सोशल प्रोडक्टिविटी के लिए टूल** मानकर उन्हें डिह्यूमनाइज़ करता है ।

2. व्यावसायिक प्रशिक्षण और सामाजिक कल्याण

यूटिलिटेरियनिज़्म का **सोशल यूटिलिटी पर फोकस** ने इसे बनाया है:

• **व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम** (जैसे, **भारत का स्किल इंडिया मिशन** , **यूके का टी-लेवल्स**)।

• **सामाजिक कल्याण नीतियाँ** (जैसे, **न्यूनतम मजदूरी कानून** , **बेरोजगारी लाभ**) - सभी **सामूहिक कल्याण को अधिकतम करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं** ।

उदाहरण :

नेशनल **एजुकेशन पॉलिसी (NEP) 2020** (इंडिया) में एकेडमिक कोर्स के साथ **वोकेशनल स्ट्रीम भी शामिल हैं** , जो बेंथम के इस विश्वास को दिखाता है कि **एजुकेशन को समाज की ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए** ।

3. पॉलिसी में आलोचनाएँ और जवाब

शिक्षा में उपयोगितावाद पर आधुनिक बहसों में शामिल हैं:

नीतिगत मुद्दा	उपयोगितावादी औचित्य	आलोचना
अनिवार्य शिक्षा	यह पक्का करता है कि **सभी बच्चों को बेसिक स्किल्स मिलें** , जिससे समाज में उनकी उपयोगिता ज़्यादा से ज़्यादा हो।	**व्यक्तिगत स्वतंत्रता का** उल्लंघन करता है (जैसे, लिबर्टी के नुकसान सिद्धांत पर)।

नीतिगत मुद्दा	उपयोगितावादी औचित्य	आलोचना
मानकीकृत परीक्षण	**बराबर नतीजे** पक्का करता है (जैसे, बेंथम का मेज़रेबल स्किल्स पर फोकस)।	**सीखने को बिगाड़ता है** - परीक्षा के लिए सिखाता है, आलोचनात्मक सोच के लिए नहीं।
कॉर्पोरेट-वित्त पोषित शिक्षा	प्राइवेट स्कूल **एफिशिएंसी को बेहतर बनाते हैं** (जैसे, बेंथम के पैनोप्टिकॉन जैसा डिसिप्लिन)।	**एलीटिज़्म** : यह पैसे को इनाम देता है, काबिलियत को नहीं।

प्रत्युत्तर :

मॉडर्न **क्रिटिकल पेडागॉजी** (जैसे, **फ्रीरे, गिरौक्स**) का तर्क है कि यूटिलिटेरियन एजुकेशन में **न्याय शामिल होना चाहिए** - सिर्फ़ यूटिलिटी नहीं। **NEP 2020** (इंडिया) अब बेंथम/मिल के **सिर्फ़ यूटिलिटी फोकस से** आगे बढ़कर **इक्विटी, प्लूरलिज़्म और क्रिटिकल थिंकिंग पर ज़ोर देता है** ।

उपयोगितावाद से प्रेरित शैक्षणिक ढाँचे

हालांकि यूटिलिटेरियनिज़्म की कमियों पर बहस होती है, लेकिन इसके **इंस्ट्रूमेंटल और रिवॉर्ड-बेस्ड सिद्धांत तीन खास एजुकेशनल तरीकों** में अभी भी काम के हैं :

रूपरेखा	उपयोगितावादी प्रभाव	आधुनिक अनुकूलन
व्यवहारवाद (स्किनर)	पुरस्कार/दंड व्यवहार को आकार देते हैं (बेंथम का **अनुशासन**)।	**ग्रोथ माइंडसेट** (कैरोल ड्वेक) सज़ा की जगह **पॉज़िटिव रीइन्फोर्समेंट लाता है** ।
प्रगतिशील शिक्षा (ड्यूई)	शिक्षा को **समाज की ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए** (बेंथम का **वोकेशनल फोकस**)।	**एक्सपीरिएंशियल लर्निंग** (ड्यूई) + **क्रिटिकल पेडागॉजी** (फ्रेयर)।
मानकीकृत परीक्षण	**मापने लायक नतीजे** पक्का करता है (बेंथम का **हेडोनिक कैलकुलस**)।	**फॉर्मेटिव असेसमेंट** (रूबिन) + **दूसरे मेट्रिक्स** (जैसे, प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग)।

उदाहरण आवेदन :

एक **यूटिलिटेरियन स्कूल इनाम के तौर पर ग्रेड का** इस्तेमाल कर सकता है (जैसे, "अच्छा काम! यह रहा सर्टिफिकेट")। एक **मॉडर्न अडैप्टेशन ग्रोथ माइंडसेट का** इस्तेमाल कर सकता है ("तुमने सुधार किया—चलो फिर से कोशिश करते हैं!")।

समकालीन प्रासंगिकता और बहस

1. एनईपी 2020 और उपयोगितावाद

राष्ट्रीय **शिक्षा नीति (एनईपी) 2020** (भारत) दो तरीकों से **उपयोगितावादी सिद्धांतों को शामिल करती है:**

• **व्यावसायिक धाराएँ** : एनईपी 2020 में **10 + 2 व्यावसायिक पाठ्यक्रम शामिल हैं** , जो बेन्थम के **व्यावहारिक फोकस को दर्शाते हैं** ।

• **इक्विटी बनाम उपयोगिता** : जबकि एनईपी 2020 **महत्वपूर्ण सोच पर जोर देता है** , यह अभी भी **सामाजिक उपयोगिता** (जैसे, आर्थिक विकास के लिए **एसटीईएम शिक्षा) को प्राथमिकता देता है।**

आलोचना :

कुछ लोगों का तर्क है कि एनईपी 2020 में **अभी भी उपयोगितावादी पूर्वाग्रह का खतरा है** - यह **रचनात्मकता पर रोजगार को प्राथमिकता दे सकता है** ।

2. ग्लोबल बहस: क्या यूटिलिटेरियनिज़्म अभी भी रेलिवेंट है?

देश	उपयोगितावादी प्रभाव	आधुनिक चुनौती
यूके	**वोकेशनल ट्रेनिंग (T-Levels)** + **स्टैंडर्डाइज़्ड टेस्टिंग** (बेंथम **डिसिप्लिन**)।	**आलोचना** : **क्रिएटिविटी पर मैकेनिज़्म को टेस्ट करती है** (जैसे, लिबर्टी के नुकसान के सिद्धांत पर)।
यूएसए	**कॉर्पोरेट-फंडेड स्कूल** (बेंथम का **इंस्ट्रूमेंटलिस्ट अप्रोच**)।	**आलोचना** : **अभिजात्यवाद** - योग्यता की तुलना में धन को प्राथमिकता देता है।
भारत	**स्किल इंडिया मिशन** (बेंथम का **वोकेशनल फोकस**)।	**आलोचना** : **डिजिटल विभाजन** - सभी छात्रों के पास तकनीक तक पहुंच नहीं है।

PYQ मैपिंग टेबल (UGC-NET/असिस्टेंट प्रोफेसर एग्जाम)

क्र	प्रश्न प्रकार	परीक्षा	वर्ष	लगभग प्रश्न	कठिनाई
1	**उपयोगितावाद बनाम उदारवाद**	UGC नेट	2022	शिक्षा पर बेंथम और मिल के विचारों की तुलना करें। मुख्य अंतर क्या हैं?	★★★
2	**उपयोगितावाद की आलोचना**	सहायक प्रो.	2021	रॉल्स के अंतर सिद्धांत और शिक्षा पर इसके असर पर चर्चा करें।	★★★+

क्र	प्रश्न प्रकार	परीक्षा	वर्ष	लगभग प्रश्न	कठिनाई
3	**एनईपी 2020 और उपयोगितावाद**	UGC नेट	2023	NEP 2020 वोकेशनल एजुकेशन में यूटिलिटेरियन प्रिंसिपल्स को कैसे शामिल करता है?	★★☆
4	**शैक्षणिक ढांचे**	सहायक प्रो.	2020	समझाइए कि बिहेवियरिज़्म (स्किनर) बेंथम के यूटिलिटेरियन अप्रोच के साथ कैसे मेल खाता है।	★★☆
5	**जन शिक्षा की आलोचना**	UGC नेट	2024	क्या यूटिलिटेरियन मास एजुकेशन (जैसे, भारत के स्कूल) सही है? उदाहरण देकर बहस करें।	★★★+

अपेक्षित प्रश्न प्रकार 2025–26

1. **अभिकथन-तर्क** : बेन्थम का **सुखवादी कलन** बनाम मिल का **नियम-आधारित उपयोगितावाद** — कौन सा अधिक नैतिक है?
2. **केस स्टडी** : एक **व्यावसायिक स्कूल के पाठ्यक्रम का विश्लेषण करें** - क्या यह उपयोगितावादी है, या यह रॉल्स के न्याय का उल्लंघन करता है?
3. **कथन-आधारित** : "उपयोगी शिक्षा हमेशा निष्पक्ष होती है।" उदाहरणों के साथ चर्चा करें।
4. **PYQ ट्रेंड** : **NEP 2020 के यूटिलिटेरियन एलिमेंट्स** (जैसे, वोकेशनल स्ट्रीम्स) और उनकी **आलोचनाओं** (जैसे, डिजिटल डिवाइड) के बारे में पूछे जाने की संभावना है।
5. **इंटरडिसिप्लिनरी लिंक : एजुकेशन में यूटिलिटेरियनिज़्म इकोनॉमिक पॉलिसी** (जैसे, मिनिमम वेज) से कैसे जुड़ता है ?

त्वरित संशोधन सारांश

विषय	प्रमुख बिंदु
बेंथम का हेडोनिक कैलकुलस	खुशी/दर्द को ज़्यादा से ज़्यादा करना; वोकेशनल ट्रेनिंग; इनाम पर आधारित अनुशासन।
मिल का उदारवाद	ज़्यादा खुशी; व्यक्तिगत आज़ादी; नियम-आधारित उपयोगितावाद (ऑन लिबर्टी)।
आलोचनाओं	रॉल्स का **अंतर सिद्धांत** , मार्क्स का **वर्ग पूर्वाग्रह** , चोम्स्की का **संज्ञानात्मक हेरफेर** ।
एनईपी 2020 और उपयोगितावाद	वोकेशनल स्ट्रीम + इक्विटी डिबेट।
शैक्षणिक ढांचे	बिहेवियरिज़्म (स्किनर) + मॉडर्न अडैप्टेशन (ग्रोथ माइंडसेट)।

हल किए गए MCQ ब्लॉक

1. **प्रश्न** : किस विचारक ने तर्क दिया कि शिक्षा को केवल भौतिक सुखों की तुलना में **उच्च सुखों** (जैसे, बौद्धिक विकास) को प्राथमिकता देनी चाहिए?
• **A)** बेंथम
• **B)** मिल
• **C)** रॉल्स
• **D)** मार्क्स
उत्तर : B) मिल
सॉल्यूशन : यूटिलिटेरियनिज़्म में मिल का **"हायर प्लेज़र" तर्क, बेन्थम के हेडोनिक यूटिलिटी** पर फोकस से अलग है ।
2. **प्रश्न** : रॉल्स का **अंतर सिद्धांत** सीधे तौर पर किस उपयोगितावादी सिद्धांत का खंडन करता है?
• **A)** बेंथम का **हेडोनिक कैलकुलस**
• **B)** मिल का **नुकसान सिद्धांत**
• **C)** उपयोगितावाद की **खुशी को अधिकतम करना**
• **D)** रॉल्स का अपना **न्याय निष्पक्षता के रूप में**
उत्तर : C) उपयोगितावाद की **खुशी को अधिकतम करना**
सॉल्यूशन : रॉल्स का तर्क है कि **न्याय उपयोगिता से पहले होना चाहिए** - सबसे कम सुविधा प्राप्त लोगों को संसाधन मिलने चाहिए, भले ही इससे समग्र खुशी कम हो जाए।
3. **प्रश्न** : **नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP) 2020 में** वोकेशनल एजुकेशन शामिल है। कौन सा यूटिलिटेरियन विचारक इसका समर्थन करेगा?
• **A)** बेंथम
• **B)** मिल
• **C)** रॉल्स

• **D)** मार्क्स

उत्तर : A) बेंथम

उत्तर : NEP 2020 की **वोकेशनल स्ट्रीम्स** बेंथम के इस विश्वास से मेल खाती हैं कि **शिक्षा को समाज की ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए**।

प्रैक्टिस सेट (अनसॉल्व्ड)

शिक्षा में **व्यक्तिगत स्वतंत्रता बनाम सामाजिक उपयोगिता** पर बेंथम और मिल के विचारों की तुलना करें।

2. चर्चा करें कि **यूटिलिटेरियनिज़्म मॉडर्न वोकेशनल ट्रेनिंग प्रोग्राम** (जैसे, भारत का स्किल इंडिया मिशन) को कैसे प्रभावित करता है।

3. इस बात पर बहस करें कि क्या एजुकेशन में **स्टैंडर्डाइज़्ड टेस्टिंग** (यूटिलिटेरियन) सही है।

4. समझाइए कि कैसे **रॉल्स का अंतर सिद्धांत** बेन्थम के **हेडोनिक कैलकुलस को चुनौती देता है**।

NEP 2020 शिक्षा में **उपयोगितावाद** और **समानता के बीच** संतुलन कैसे बनाता है ?

परीक्षा में सफलता के लिए अंतिम नोट्स

• **बेन्थम बनाम मिल** : बेन्थम = **सुखवादी उपयोगिता** (खुशी/दर्द); मिल = **उदारवादी उपयोगितावाद** (स्वतंत्रता + उपयोगिता)।

• **आलोचनाएँ** : रॉल्स (न्याय), मार्क्स (वर्ग पूर्वाग्रह), चॉम्स्की (छल-कपट)।

• **एनईपी 2020** : व्यावसायिक धाराएँ + इक्विटी बहस।

• **शिक्षणशास्त्र** : व्यवहारवाद (स्किनर) + आधुनिक अनुकूलन (विकास मानसिकता)।

• **PYQ फोकस** : उपयोगितावाद बनाम उदारवाद, एनईपी 2020, रॉल्स की आलोचनाएँ।

क्रिटिकल पेडागॉजी और शिक्षा पर मार्क्सवादी विचार

वस्तुनिष्ठ परीक्षा फोकस

परीक्षा तथ्य क्लस्टर

1. एंटोनियो ग्राम्स्की का **हेजेमनी** थ्योरी (1920s-30s) शिक्षा, मीडिया और संस्थानों में आइडियोलॉजिकल कंट्रोल के ज़रिए रूलिंग क्लास द्वारा कल्चरल डोमिनेंस को मानता है।

2. लुई अल्थसर की **रिप्रोडक्शन थ्योरी** (1970s) का तर्क है कि स्कूल छिपे हुए करिकुलम के ज़रिए भविष्य की लेबर भूमिकाओं के लिए छात्रों को चुनकर क्लास स्ट्रक्चर को रिप्रोड्यूस करते हैं।

3. पाउलो फ्रीरे की पेडागॉजी ऑफ द ऑप्रेस्ड (1970) दमनकारी शिक्षा प्रणालियों की आलोचना करती है, और आलोचनात्मक चिंतन और सहभागी शिक्षा के माध्यम से मुक्ति की वकालत करती है।

4. मार्क्स की पूंजीवादी शिक्षा की आलोचना (1845) श्रम में अलगाव, वर्ग वर्चस्व के उपकरण के रूप में शिक्षा, और श्रमिक सशक्तीकरण की आवश्यकता को लक्षित करती है।

5. NEP 2020 (भारत) **शिक्षा में सामाजिक न्याय** (आर्टिकल 21A) को ज़रूरी बनाता है, जिसमें सबको साथ लेकर चलने वाली पढ़ाई और भेदभाव-विरोधी नीतियों पर ज़ोर दिया गया है।

6. **सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा समिति (2009)** ने स्कूल पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण शिक्षण पद्धति को एकीकृत करने की सिफारिश की।

7. शिक्षा में **वर्ग संघर्ष का** उदाहरण छात्र आंदोलनों से मिलता है, जैसे 1974-75 में नवउदारवादी सुधारों के खिलाफ भारतीय छात्र विरोध प्रदर्शन।

8. **एंटी-कोलोनियल शिक्षा-पद्धति** (जैसे, टैगोर की गीतांजलि) पश्चिमी शिक्षा के कोलोनियल पूर्वाग्रह की आलोचना करती है, और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों का पक्ष लेती है।

MCQ ट्रैप अलर्ट

1. **गलत:** ग्राम्शी का दबदबा पूरी तरह से आर्थिक है, सांस्कृतिक नहीं।

असल में: हेजेमनी में इकोनॉमिक पावर और कल्चरल दबदबे का मेल होता है (जैसे, भाषा, मीडिया पर रूलिंग क्लास का कंट्रोल)।

2. **गलत:** फ्रेरे की शिक्षा-पद्धति केवल औपचारिक शिक्षा का विरोध करती है, अनौपचारिक सीखने की जगहों को नज़रअंदाज़ करती है।

असल में: उनका नज़रिया उन सभी एजुकेशन सिस्टम की आलोचना करता है जो क्रिटिकल थिंकिंग को दबाते हैं (जैसे, वर्कप्लेस ट्रेनिंग, फैमिली ट्रांसमिशन)।

3. **गलत:** मार्क्सवादी शिक्षा सिद्धांत वर्ग संघर्ष में व्यक्तिगत एजेंसी को नज़रअंदाज़ करता है।

असल में: मार्क्सवाद विरोध (जैसे, हड़ताल, स्टूडेंट प्रोटेस्ट) को मानता है, लेकिन शिक्षा को सिस्टमिक कंट्रोल का एक टूल मानता है।

अभिकथन-कारण

1. **A:** अल्थुसर की रिप्रोडक्शन थ्योरी बताती है कि स्कूल क्लास इनइक्वालिटी को क्यों मज़बूत करते हैं।

R: स्कूल भविष्य में लेबर रोल के लिए स्टूडेंट्स को हिडन करिकुलम के ज़रिए चुनते हैं।

→ A सही है, R सही है, R, A को सही तरह से समझाता है।

2. **A:** फ्रेरे की शिक्षा-पद्धति पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित तरीकों को अस्वीकार करती है।

उत्तर: यह स्टूडेंट-सेंटर्ड, पार्टिसिपेटरी लर्निंग को बढ़ावा देता है।